अध्याय 1: साखी

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 12 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1	प्रश्न-अभ्यास (क) — पाठ से	7 प्रश्न
प्रश्नावली 1.2	प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए	4 प्रश्न
प्रश्नावली 1.3	भाषा अध्ययन — प्रचलित रूप	1 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 — प्रश्न-अभ्यास (क) — पाठ से

प्रश्न 1

मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

हल

कबीर की साखी में कहा गया है — 'ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ। अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ॥'

जब हम मन का अहंकार (आपा) छोड़कर मीठी वाणी बोलते हैं, तो हमारे भीतर क्रोध, ईर्ष्या और अहंकार का भाव मिट जाता है। इससे हमारा मन शांत और तन शीतल हो जाता है।

दूसरी ओर, मधुर वाणी सुनकर दूसरों के मन में प्रसन्नता और सुख का संचार होता है।

इस प्रकार मीठी वाणी एक साथ वक्ता और श्रोता — दोनों को लाभान्वित करती है।

उत्तर: मन का अहंकार छोड़कर मीठी वाणी बोलने से वक्ता का तन शीतल होता है और सुनने वाले को सुख मिलता है।

प्रश्न 2

दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

हल

कबीर की साखी है — 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि। सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि॥'

यहाँ 'दीपक' ज्ञान का प्रतीक है और 'अँधियारा' अज्ञान का। जब तक मन में अहंकार ('मैं') रहता है, तब तक ईश्वर (हरि) का अनुभव नहीं होता।

जैसे ही 'दीपक' अर्थात् ज्ञान की ज्योति जागती है — अहंकार मिट जाता है और ईश्वर के दर्शन होते हैं।

अज्ञान रूपी अँधियारा स्वतः ही नष्ट हो जाता है, ठीक वैसे जैसे दीपक जलने पर अंधकार मिट जाता है।

उत्तर: ज्ञानरूपी दीपक के प्रकट होते ही अहंकार मिटता है और अज्ञानरूपी अँधियारा दूर हो जाता है — ईश्वर से साक्षात्कार होता है।

प्रश्न 3

ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

हल

कबीर की साखी है — 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि। ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहि॥'
कस्तूरी हिरण की नाभि (कुंडलि) में ही बसती है, परंतु हिरण उसकी सुगंध से व्याकुल होकर वन-वन में उसे ढूँढता फिरता है — जबकि वह उसके पास ही है।
उसी प्रकार ईश्वर (राम) घट-घट में अर्थात् प्रत्येक प्राणी के हृदय में विद्यमान है।
परंतु मनुष्य अज्ञान, माया और अहंकार के कारण उसे बाहर तीर्थ-स्थलों और मंदिरों में ढूँढता रहता है — इसीलिए संसार उसे नहीं देख पाता।

उत्तर: अज्ञान और अहंकार के कारण मनुष्य ईश्वर को बाहर ढूँढता है, जबकि वह हर घट (हृदय) में निवास करता है।

प्रश्न 4

संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

हल

कबीर की साखी है — 'सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै। दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै॥'
यहाँ 'सोना' अज्ञान और सांसारिक मोह-माया में लिप्त रहने का प्रतीक है। जो लोग संसार की सुख-सुविधाओं में डूबे रहते हैं और ईश्वर से विमुख हैं, वे बाहर से सुखी दिखते हैं।
'जागना' आत्मज्ञान और ईश्वर-विरह की वेदना का प्रतीक है। कबीर जैसे ज्ञानी लोग ईश्वर के विरह में जागते और रोते रहते हैं — इसलिए वे दुखी दिखाई देते हैं।
वास्तव में जो सोया है वह अज्ञान की नींद में है — उसका सुख मिथ्या है। जो जागा है वह सत्य का अनुभव कर रहा है — उसका दुख भी ईश्वर-प्रेम की पराकाष्ठा है।
इस प्रतीक का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि यह सांसारिक सुख और आध्यात्मिक जागृति के अंतर को सजीव रूप में समझाता है।

उत्तर: 'सोना' अज्ञान-माया का प्रतीक है (सुखी संसार), 'जागना' आत्मज्ञान-विरह का (दुखी कबीर)। वास्तविक सुख जागरण में है, मोह की नींद में नहीं।

प्रश्न 5

अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

हल

कबीर की साखी है — 'निदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ। बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ॥'
कबीर कहते हैं कि निंदक (आलोचना करने वाले) को अपने पास रखना चाहिए — उसे अपने आँगन में झोपड़ी बनाकर बसा लेना चाहिए।
निंदक की आलोचना साबुन और पानी के बिना ही स्वभाव को निर्मल कर देती है।

जब कोई हमारी बुराइयाँ बताता है तो हम उनसे सावधान होते हैं और अपने दोषों को सुधारते हैं। इस प्रकार निंदक स्वभाव को शुद्ध करने का सबसे सरल और निःशुल्क माध्यम है।

उत्तर: कबीर ने निंदक को पास रखने का उपाय सुझाया है — निंदक बिना साबुन-पानी के स्वभाव को निर्मल कर देता है।

प्रश्न 6

'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ' — इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

हल

कबीर की साखी है — 'पोथी पिढ़ पिढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोइ। ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥'

कवि कहना चाहता है कि बड़े-बड़े ग्रंथ (पोथियाँ) पढ़ते-पढ़ते सारी दुनिया मर गई, परंतु कोई सच्चा पंडित (ज्ञानी) नहीं बना।

जो मनुष्य प्रिय (ईश्वर) का एक अक्षर — अर्थात् ईश्वर के नाम का सार या प्रेम-भाव — पढ़ लेता है, वही सच्चा पंडित बन जाता है।

अभिप्राय यह है कि शास्त्रों का बाह्य ज्ञान नहीं, बल्कि ईश्वर-प्रेम और अनुभव-ज्ञान ही वास्तविक पांडित्य है। सच्ची विद्या हृदय से पढ़ी जाती है, पुस्तकों से नहीं।

उत्तर: ग्रंथ पढ़ने से नहीं, ईश्वर-प्रेम के एक अक्षर को हृदय से ग्रहण करने वाला ही सच्चा पंडित होता है।

प्रश्न 7

कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

हल

कबीर की भाषा 'सधुक्कड़ी' या 'पचमेल खिचड़ी' कही जाती है।

इन साखियों में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का मिश्रण है — जैसे 'बाँणी' (बोली), 'आँगणि' (आँगन), 'साबण' (साबुन), 'नेड़ा' (निकट), 'जाल्या' (जलाया)।

साखियाँ दोहा छंद में हैं — 13 और 11 मात्राओं के दो चरण।

भाषा सरल, व्यावहारिक और जनसाधारण की है — जटिल संस्कृत शब्दावली का अभाव है।

प्रतीकों और बिम्बों का सजीव प्रयोग है — कस्तूरी-मृग, दीपक-अँधियारा, घर जलाना आदि।

अनुभव-सिद्ध अभिव्यक्ति है जो सीधे मर्म को छूती है।

उत्तर: कबीर की भाषा सधुक्कड़ी/पचमेल खिचड़ी है — अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, पंजाबी मिश्रित; दोहा छंद में; सरल प्रतीकात्मक जनभाषा।

प्रश्नावली 1.2 — प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

हल

पूरी साखी: 'बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ। राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ॥'
भाव: इस साखी में कबीर ईश्वर-वियोग की तीव्र पीड़ा का वर्णन करते हैं।
'बिरह' (विरह) को 'भुवंगम' (साँप) से उपमित किया गया है। जैसे सर्प-दंश का कोई मंत्र काम नहीं करता, उसी प्रकार ईश्वर-विरह की वेदना को कोई उपाय नहीं मिटा सकता।
जो व्यक्ति राम (ईश्वर) के वियोग में है, वह न तो जी सकता है, न ठीक से मर सकता है। यदि जीता भी है तो पागल (बौरा) की तरह — विरह में दीवाना हो जाता है।
कबीर यहाँ भक्ति की उस उच्चावस्था का चित्रण करते हैं जहाँ ईश्वर के बिना जीवन असह्य हो जाता है।

उत्तर: विरह रूपी साँप के डसने पर कोई उपाय काम नहीं करता — राम-वियोगी पागल-सा हो जाता है या जी नहीं सकता।

प्रश्न 2

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।

हल

पूरी साखी: 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि। ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहि॥'
भाव: कस्तूरी मृग की नाभि (कुंडलि) में ही बसती है, परंतु मृग उसकी सुगंध से मोहित होकर वन-वन में उसे खोजता रहता है — जबकि वह खुद उसे अपने पास रखता है।
यह मनुष्य की उसी भ्रांति का प्रतीक है — ईश्वर प्रत्येक प्राणी के हृदय (घट-घट) में निवास करता है, फिर भी मनुष्य उसे तीर्थों, मंदिरों और बाहरी आडंबरों में खोजता रहता है।
संसार इस सत्य को नहीं देख पाता क्योंकि माया और अहंकार उसके नेत्रों पर पर्दा डाले रहते हैं।
कबीर का संदेश है — आत्म-खोज करो, ईश्वर भीतर ही मिलेगा।

उत्तर: जैसे कस्तूरी नाभि में होते हुए भी मृग उसे वन में ढूँढता है, वैसे ही ईश्वर हर हृदय में होते हुए भी मनुष्य उसे बाहर खोजता रहता है।

प्रश्न 3

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।

हल

पूरी साखी: 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि। सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि॥'
भाव: जब तक मन में 'मैं' अर्थात् अहंकार था, तब तक ईश्वर (हरि) का अनुभव नहीं हुआ।
जब ज्ञानरूपी दीपक प्रज्वलित हुआ — अहंकार का नाश हुआ — तब ईश्वर की अनुभूति हुई।

यह अद्वैत वेदांत का भाव है: जीवात्मा और परमात्मा एक ही हैं। अहंकार (माया) ही दोनों के बीच की दीवार है।
अहंकार मिटते ही ब्रह्म-साक्षात्कार हो जाता है।
जब 'मैं' नहीं रहा, तब 'हरि' ही शेष रहे — जगत का सारा अँधियारा (अज्ञान) मिट गया।

उत्तर: अहंकार और ईश्वर एक साथ नहीं रह सकते — जब ज्ञानदीपक जला तो अहंकार मिटा और ईश्वर का साक्षात्कार हुआ।

प्रश्न 4

पोथी पिढ़ पिढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

हल

पूरी साखी: 'पोथी पिढ़ पिढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोइ। ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥'
भाव: बड़े-बड़े धर्मग्रंथ (पोथियाँ) पढ़ते-पढ़ते सारी दुनिया समाप्त हो गई, परंतु कोई सच्चा ज्ञानी (पंडित) नहीं बना।
सच्चा पंडित वह है जो ईश्वर (पीव = प्रिय) के नाम का एकमात्र अक्षर — अर्थात् उसके प्रेम और अनुभव का सार — हृदय से ग्रहण करे।
कबीर शास्त्रीय और बाह्य ज्ञान की निरर्थकता बताते हैं और अनुभव-ज्ञान को सर्वोपरि मानते हैं।
ईश्वर से प्रेम और उसका अनुभव ही वास्तविक विद्या है — पुस्तकीय ज्ञान मात्र भार है।

उत्तर: ग्रंथ पढ़ने से कोई पंडित नहीं बना; जो ईश्वर-प्रेम का एक अक्षर हृदय में उतार ले, वही सच्चा पंडित है।

प्रश्नावली 1.3 — भाषा अध्ययन — प्रचलित रूप

प्रश्न 1

पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप उदाहरण के अनुसार लिखिए — उदाहरण: जिवै — जीना औरन, माँहि, देख्या, भुवंगम, नेड़ा, आँगणि, साबण, मुवा, पीव, जालौं, तास।

हल

उदाहरण: जिवै — जीना
औरन — औरों को / दूसरों को
माँहि — में / भीतर
देख्या — देखा
भुवंगम — भुजंग / साँप
नेड़ा — निकट / पास
आँगणि — आँगन
साबण — साबुन
मुवा — मरा / मर गया
पीव — प्रिय / प्रियतम
जालौं — जलाऊँ
तास — उसका

उत्तर: औरन=औरों को, माँहि=में, देख्या=देखा, भुवंगम=साँप, नेड़ा=निकट, आँगणि=आँगन, साबण=साबुन, मुवा=मरा, पीव=प्रिय, जालौं=जलाऊँ, तास=उसका।